शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैश्विक क्षितिज पर हिन्दी

डॉ० कंचन गुप्ता,
हिन्दी विभाग,
डी०ए-वी०, कॉलेज,
कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

वैश्विक क्षितिज पर हिन्दी

- डॉ० कंचन गुप्ता

श्रमजीवी के देश में
लेखक : डॉ० महेश 'दिवाकर'
प्रकाशक : विश्व पुस्तक प्रकाशन
३०४-ए, बी०/जी०-6,
पश्चिम विहार
नई दिल्ली-63, भारत
पृष्ठ : 70
मूल्य : 100/-
ISBN: 978-81-89092-23-8

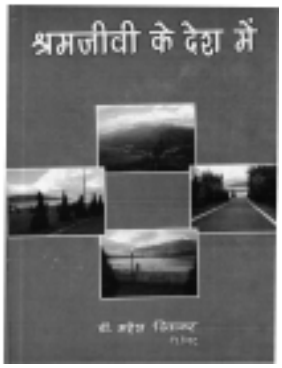

'श्रमजीवी के देश' में महेश दिवाकर द्वारा लिखित एक साहित्यिक यात्रा वृतान्त है। सृजन संस्था, रायपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा ताशकन्द-समरकन्द (उजबेकिस्तान) में आयोजित पाँचवे अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में आयोजित की गयी। लेखक इस साहित्यिक कार्यक्रम में प्रतिभागी थे। लेखक इसके पहले भी दो विदेश यात्राएँ कर चुके है। पहली नार्वे और स्वीडन देशों की यात्रा के रूप में तो दूसरी ट्रिनीडाड और टुवैगों की साहित्यिक यात्राएँ थी जो अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के रूप में हुई और जिस पर लेखक ने क्रमशः सौन्दर्य के देश में (नार्वे-स्वीडन) और कर्मवीरों के देश में (ट्रिनीडाड-टुबैगो) नामक पुस्तकें लिखी हैं। इस पुस्तक में ताशकन्द में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी का क्रमवार विवरण प्रस्तुत किया गया है। संगोष्ठी के सहभागी सदस्यों के विवरण के साथ संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र एवं 31 कृतियों का लोकार्पण, अलंकरण, निराला काव्य सम्मान 2012, सृजन गाथा सम्मान प्रदान करने एवं संचालन का सम्पूर्ण विवरण है। द्वितीय सत्र में नृत्थागना चित्र जांडिग का नृत्य, 'आलोचना और उत्तर औपनिवेशक आलोचना समय' पर सम्पन्न संगोष्ठी वंचित शोध पत्रों का विवरण है।

इसी प्रकार द्वितीय दिवस की संगोष्ठी में भाषा की संस्कृति या संस्कृति की भाषा विषय पर स्वतः लेखक द्वारा प्रस्तुत शोध आलेख है।

संगोष्ठी से बचे हुए समय में नगर भ्रमण के रूप में ताशकन्द में महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों पर घूमना और मनोहारी दृश्यों का वृत्तांत जैसे चुंगेनहिल्स, चारवाक लेक, आमू हरिया, चिरचिक दरिया जिस पर चार वाक लेक (बाँध) बना है। इसमें लेखक ने राहत झील इत्यादि के अनूठे सौन्दर्य का वर्णन किया है। साथ ही 'हजरत इमाम काम्पलेक्स' एवं 'किस माल्स' में शापिंग के अनुभवों को भी लेखक ने अभिव्यक्त किया है।

ताशकन्द के अलावा समरकन्द के भी दर्शनीय स्थल जैसे तैमूर लंग के कमबरे स्टैच्यू, आफेशिया मार्केट का भी भावविहगम दृश्य खींचा है। इन सबके बीच में ताशकन्द के लोग उनके रहन-सहन, संस्कृति, परिश्रम, वहाँ की सुख सुविधाओं का भी वर्णन किया है। ताशकन्द रेलवे स्टेशन की भव्यता, गरिमा, की प्रशंसा करते हुए लेखक ने भारतीय रेल प्रशासन एवं मंत्रालय को वहाँ से कुछ सीखने का परामर्श भी दिया है। ताशकन्द की प्रशस्तिगान करने में लेखक यह भूल गया कि ताशकन्द की आबादी भारत की तुलना में नगण्य है।

इस संगोष्ठी एवं घूमने के मध्य बचे हुए समय में लेखक का कवि रूप सजग हो गया है और उसने दो-तीन गीतों की रचना भी की है। एक लम्बी कविता के साथ ही पुस्तक का समापन हुआ है। यात्रा अनुभवों को शाब्दिक अभिव्यक्ति देना और उसके भावात्मक अनुभवों के साथ जुड़ना लेखक की संवेदनशीलता का परिचय प्रस्तुत करता है।